International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232
Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 3; Issue 5; September 2017; Page No. 18-20

राजस्थानी भाषा में निर्मित क्षेत्रीय सिनेमा द्वारा राजस्थान के लोक देवताओं का विवरण

एकता सिंह
शोधार्थी, इतिहास विभाग, बनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान भारत।

प्रस्तावना

जनसंपर्क के अन्य साधनों की अपेक्षा सिनेमा को भाषा के विस्तार का सबसे बढ़िया माध्यम इसलिए माना जाता है, क्याकि ये ध्वनि और दृश्य की ताकत है। राजस्थानी फिल्मों ने भी बड़े अनुभव के बाद अपनी दृश्य भाषा का निर्माण एवं गठन सुनिश्ति किया है।

राजस्थानी भाषा का उद्भव विद्वान वर्ग शैरसेनी अपभ्रंश से मानते है। कुछ विद्वानों का मानना है कि प्राचीन राजस्थानी ही अपभ्रंश की पहली संतान है। टेसीटोरी के अनुसार, 12 वीं सदी के लगभग यह भाषा अस्तित्व में आ चुकी थी। कुछ लोग इसे नागर अपभ्रंश से व्युत्पन्न मानते हैं। यह भाषा तत्कालीन साहित्यिक भाषा बन चुकी थी जो उस समय गुजरात तथा पश्चिम राजस्थान में प्रचलित थी ग्रियर्सन का मानना है कि आचार्य हेमचन्द्र ने अपने व्याकरण में इसके अनेक साहित्यिक पदों को उद्धत किया है।[1]

धीरेन्द्र वर्मा शौरसेनी अपभ्रंश से राजस्थानी के उद्गम को मानते है विदेशी विद्वान ग्रियर्सन ने राजस्थानी की उत्पत्ति नागर अपभ्रंश एवं पश्चिमी हिन्दी से मानी है। मोतीलाल मेनारिया ने प्राकृत का ही परिवर्तित रुप अपभ्रंश माना है और अपभ्रंश को आधुनिक आर्य भाषाओं के रुप में स्वीकार किया है। मेनारिया के अनुसार 27 रुपों में से शौरसेन अपभ्रंश का प्रचार–क्षेत्र अत्यन्त व्यापक रहा है।उसी से ही पश्चिमी अपभ्रंश और पूर्वी अपभ्रंश इन दो रुपों में राजस्थानी भाषा का विकास माना है। इस प्रकार विभिन्न विद्वानों ने शौरसेनी अपभ्रंश को ही राजस्थानी भाषा की उत्पत्ति का आधार स्वीकार किया है। राजस्थानी भाषा को दो भागों में बाँटा जा सकता है–पश्चिमी राजस्थानी के अन्तर्गत मारवाड़ी मेवाड़ी, बागड़ी और शेखावटी बोलियाँ है और पूर्वी राजस्थानी के अन्तर्गत ढूढाड़ी, हाड़ौती, मेवाती अहीरवाटी आदि है।

राजस्थानी भाषा का उपयोग यहां के लोग साधारण बोलचाल में, साहित्य तथा सिनेमा में भलिभांति हुआ है। सिनेमा एक ऐसी विधा है जिसमें सम्पूर्ण विधाओं का अंश मिल जाता है। राजस्थानी भाषा भी सिनेमा में समाहित है। क्षेत्रीय सिनेमा के द्वारा इस भाषा को स्पष्ठ ढंग से उभारने का प्रयास किया है क्षेत्रीय सिनेमा ने राजस्थानी लोक संस्कृति को विभिन्न आयामों में प्रदर्शित किया है ताकि राजस्थान की लोक संस्कृति साधारण जनमानस तक आसानी से पहुँच सके।

राजस्थानी भाषा में चलचित्रों का निर्माण 1942 से प्रारम्भ हुआ था। प्रथम चलचित्र 'नजराना' हिन्दी के साथ राजस्थानी भाषा में भी बनी थी। इसके बाद, दो दशकों तक राजस्थानी सिनेमा ठहरा रहा, 1961 में बी. के. आदर्श ने 'बाबा सा की लाडली' से राजस्थानी फिल्मों का निर्माण फिर से शुरु हुआ था। 'नानी बाई को मायरो', 'बाबा रामदेव' प्रसिद्ध फिल्में 1963 में बनी, परन्तु एक बार फिर से यह दौर थम गया। 1973 में रंगीन फिल्म 'लाज राखें राणी सती' बनी जो बुरी तरह असफल हो गयी थी। इसके बाद 1982 में 'सुपातर बीनणी' की जबरदस्त कामयाबी ने राजस्थानी फिल्मों को संजीवनी दी व फिल्मों के निर्माण ने गति पकड़ी। वर्तमान में राजस्थानी फिल्मों का आंकड़ा 70 से ऊपर पार हो चुका है।[2]

जोधपुर के माली परिवार के दुर्गासिंह गहलोत ने अपने पुत्र रामेश्वर सिंह के साथ सोजती गेट के बाहर दुर्गा सिंह एण्ड सन्स के नाम से मारवाड़ रिकॉर्स म्यूजीकल वॉयस के ट्रेड मार्क के साथ 1934 में मारवाड़ी लोकगीतों की ग्रामोफोन रिकॉर्ड बनाने की कम्पनी खोली थी। इनके रिकॉर्ड के ऊपर अंकित भागते शेर का मार्क मारवाड़ी ग्रामोफोन रिकॉर्ड पर घूमता नजर आता था। उस जमाने के राजपूताना प्रान्त की यह प्रथम कम्पनी थी, जिसने अनगिनत मारवाड़ी लोकगीतों को ग्रामोफोन रिकॉर्डों में ढाला था। संगीत सम्राट नौशाद के जोधपुर प्रवास के दौरान शादी समारोह में राग भैरवी में घरेलू महिलाओं द्वारा सामूहिक गायन में गाया गीत 'ये भल पधरया हो किणे रामसा देश म्हाणैं.....'इतना पसन्द आया कि उन्होंने फिल्म शहंशाह के लिए इसकी तर्ज पर गीत का सर्जन किया 'गम दिये मुश्किल, कितना नाजुक है दिल, ये न जाना, हाय–हाय ये जालिम जमाना.....'जिसे गायक सम्राट के.एल.सहगल ने गाया था।[3]

मारवाड़ के सामंती युग में दुर्गासिंह ने रजवाड़ों के लोक–पर्व, लोक त्यौहार, शादी विवाह एवं अन्य उत्सव के समय पर राजकीय ठाटबाट, शानों शौकत को सुरीली आवाज वाली महिला गाायकों द्वारा, गायन को ग्रामोफोन रिकॉर्ड के माध्यम से आम जन के घर–घर में पहुँचा दिया। इस रिकॉर्ड कम्पनी की खासियत रही है कि इसने स्वयं को केवल मारवाड़ी, भाषाई लोकगीत के संगीत तक ही सीमित रखा था। जन–जीवन के संग विभिन्न ऋतुओं में गाये जाने वाले लोक गीत, विवाह के गीत और गालियें, होली के त्यंग गीत, सावन के गीत, व्रत त्यौहारों के गीत, मांड, जैन स्तवन, राग के लोक गीत, रणबांकुरों की वीर–गाथाओं व लोक कथाओं के गीत इत्यादि विभिन्न विषयों पर मारवाड़ी भाषा में रिकॉर्ड तैयार करवाये थे[4]

राजस्थान में सुर्यनगरी के नाम से विख्यात मारवाड़ संभाग के जोधपुर नगर के निवासी एवं कलाप्रेमी श्री मोहन स्वरूप महेश्वरी ने सन् 1967 में 'फिल्म सोसायटी ऑफ जोधपुर' के नाम से फिल्मी कला व संस्कृति को समर्पित एक संस्था की शरुआत की थी। यह सोसायटी लगाातार सक्रिय रहकर अपने उद्देश्यों के प्रति पूर्ण रुप से समर्पित बनी हुयी है।[5] सुजानगढ़ के मूल निवासी श्री के.सी. मालू ने सन् 1988 में जौहरी बाजार के हल्दिया हाउस में वीणा केसेट के नाम से ऑडियो कम्पनी की शुरुआत की थी[6]। राजस्थान लोकगीतों की सफलता के बाद इन्होंने राजस्थानी फिल्मों को आडियो केसेट के रुप में परिवर्तित कर दिया था इसमें भोमली (1991), बंधन वूचनारो (1991), भाईदूज (1991), डिग्गीपुरी का राजा (1994), जय नाकौड़ा भैरव (1998), इत्यादि की अडियो केसेट मार्केट में लेकर आये थे।[7]

इस प्रकार समय के अनुरुप राजस्थानी सिनेमा का विस्तार होता

गया। बाबा रामदेव (1963), वीर तेजा जी (1982), इनके माध्यम से राजस्थान के जनजीवन में व्याप्त लोक आस्था, लोक देवी–देवता, पर विस्तारपूर्वक विवरण प्रस्तुत हैं।

रामदेव जी (1963)

पश्चिमी राजस्थान के प्रमुख संत लोक देवता पीर के नाम से विख्यात लोक देवता रामदेव का जन्म अजमल और मेणादे के यहां हुआ था। तंवर वंश के इतिहास के अनुसार सम्व्त1131 वि. में दिल्ली का राज्य अपने दौहित्र पृथ्वीराज चौहान को देकर अनंगपाल तीर्थ यात्रा को गये थे। इस आधार पर इनका जन्म स. 1061–1165 के मध्य माना जाता है। रामदेव के पिता रिणसी को अनंगपाल का भाई मानकर उनकी दूसरी पीढ़ी में रामदेव जी का जन्म माना गया है। फिल्म में दिखाया गया कि अजमाल कृष्ण भक्ति के पुजारक थे। उन्हें कोई पुत्र नहीं था। कृष्ण भक्ति से प्रसन्न होकर भगवान विष्णु स्वंय रामदेव जी के रुप में इनके घर पालने में अवतरित हुए थे। गांव वालों की मान्यता थी कि रामदेव जी का जन्म, मगनी बाई एवं शायर नामक मेघ्वाल जाति के धार्मिक परिवार के घर हुआ था। शुरुआत में सभी उन्हें हीन दृष्टि से देखते थे लेकिन उनकी बहुप्रतिभा और पराक्रम को देख सभी उनके कायल हो गये। बचपन में ही उन्होने भैरव राक्षस का वध करके क्षेत्र व्याप्त में अराजकता एवं आंतक को समाप्त किया था।कई चमत्कार जैसे–कोढ़ से मुक्ति , अंधों की रोशनी, इत्यादि किये। इनका विवाह अमरकोट नगर के दलजी सोढ़ा की पुत्री नेतलदे से हुआ था। फिल्म में डाली नाम की स्त्री इन्हें अत्यन्त प्रेम करती थी लेकिन उसने रामदेव जी को हमेशा भगवान का दर्जा दिया और कभी भी पत्नी का पद हासिल नहीं किया। घर से रामदेव जी गरीबों की सेवा करने के लिए निकल पड़ते है, पत्नी ने उन्हें बहुत रोका, पिता ने भी बहुत मनाया लेकिन उन्होंने किसी की बात नहीं मानी। रूणीचा नामक स्थान पर भाद्रपद शुक्ल 1515 विक्रम संवत रूणीचा[8] में आकर बस गए थे और यही पर तपक रने लगे।

रामदेव जी प्रतीक चित्र में उनके हाथ में भाला एवं कमर में तलवार लटकी हुयी है, एवं घोड़े पर सवार वीर पुरुष के रुप में दिखाया गया है। ये निम्न जातियों के उद्धारक थे। हिन्दू इन्हें कृष्ण का अवतार मानते है वही मुस्लिम रामसापीर के रुप में उनकी इबादत करते है। मेले के दिनों में असंख्य श्रदालु भक्तिभाव से चूरमा, मिठाई, दूध, नारियल और घूप आदि प्रसाद चढ़ातेहै। इन पर कई लोक भजन आधारित है। जिनमें उसका गुणगान किया गया है। उदाहरणार्थ :– उरे ए रूणीचे रा राज राणी नेतल रा भरतार।

म्हारो हेलो सुणो जी रामा पीर जी।
घर–घर होवे पूजा थारी, गांव–गांव उस गावैजी
जो कोई लेवे नाम पीर मन चाहा फल पावै जी।
हो राम सा पीर थारी पैडी पे ढोक लगावा।
मनडेरा फूल चढ़ावा, हे रूणीचे.....[9]

तेजा जी (1982)

फिल्म की कहानी एक ऐसी महिला की होती है जिसके कोई सन्तान नहीं हैं सभी लोग उसे ताने मारते हैं, फिर वह आत्महत्या करने की सोचती हैं लेकिन तभी आकाशवाणी होती है कि नाग देवता की अराधना करें तो सभी इच्छा पूरी हो जायेगी। नाग देवता की स्तुति करने के उपरांत उन्हें एक पुत्र प्राप्त होता है जिसका नाम उन्होनें तेजा रखा। बचपन में ही रायमल की पुत्री से विवाह हो जाता है लेकिन विवाह के वक्त तेजा के पिता , रायमल के किसी आदमी को, गुस्से में आकर मार देते है जिससे रायमल वहाँ से रुठ कर चले जाते हैं।

रायमल के रिश्तेदारों ने बदला लेने के लिए उनकी फसल को जला देते हैं। जिसे देख तेजा के पिता की मृत्यु हो जाती है। तेजा जब बड़ा होता है तो वह अपनी पत्नी को लेने जाता है तब उसी दिन मीणे, लच्छा नामक गुजरी की गाये चुराकर ले गये। गुजरी ने तेजाजी से गायों को छुड़ाने की प्रार्थना की थी। प्रार्थना स्वीकार कर वे मुक्त करवाने जा ही रहे थे लेकिन सुरसुरे (किशनगढ़) में उन्हें साँप मिला। तेजा जी ने साँप को डसने सें रोका और वचन दिया कि वह गायों को मुक्त कराने के बाद वह स्वयं यहां वापिस आयेंगें। कठिन परिश्रम करके तेजाजी गायों को मुक्त करानें में सफल हुये परन्तु वे अत्यधिक घायल हो चुके थे। प्रतिज्ञानुसार वे वापिस साँप के पास गये। लड़ाई में तेजाजी के पूरे शरीर पर घाव हो गये थे कोई भी स्थान शेष नहीं बचा जहां रक्त न हो , तब तेजा जी ने अपनी घाव रहित जीभ व हथेली को साँप के काटने के लिए प्रस्तुत किया। साँप के काटते ही वे मृत्यु को प्राप्त हो गये।

वर्तमान में प्रतीक चिन्ह के अर्न्तगत तेजाजी को तलवार धारण किये हुये अश्वरोही योद्धा के रुप में दिखाया गया है। जिसकी जीभ को साँप डस रहा है।राजस्थान में भादों शक्ला दसमी को तेजा जी का पूजन होता हैं। राजस्थान में ऐसी मान्यता है कि यदि सर्प दंशित व्यक्ति के दायें पैर में तेजाजी की डोरी बांध दी जाए तो उसे विष नहीं चढ़ता। डॉ पेमाराम के अनुसार इस शैर्य पूर्व कृत्य, त्याग, वचन पालन और गौ रक्षा ने उन्हें देवत्व प्रदान किया है। इनके विभिन्न लोक भजनों से राजस्थान के जन मानस में तेजाजी के प्रति श्रद्धा भाव का परिचय मिलता है जैसे–

धरती में दोई फुलडा बड़ा जी एक सूरज दूजो चाँद।
नागण रा तेजाजी थे बड़ा थे बड़ा थो बड़ा।
धरती में दोई फुलड़ा बड़ा जी एक धरती दूजो मेह।
बा बरसे वा नीपजे जी दोन्या रो अविचल राज।
ओ नागण रा तेजाजी थे बड़ा।[10]

राजस्थानी सिनेमा इन्द्रधनुषी आभा के कारण अपने आप में निराली व अनूठी है। इसमें शौर्य, प्रेम, भक्ति, परोपकार, शरणागत, वत्सलता, मन व आचरण की शुद्धता एवं कष्ट सहिष्णुता की सतरंगी आभा झिलमिलाती है। सम्पर्ण राजस्थानी सिनेमा में लोक आस्था के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि राजस्थानी सिनेमा में लोक तत्व की जड़ें अत्यंत गहराई तक पैठी हुयी है। राजस्थानी सिनेमा में लोक आस्था और लोक संगीत को स्थान दिया गया है। जिसमें क्षेत्रीय गीत संगीत आस्था को फलने–फूलने का अवसर प्राप्त होता है।

संदर्भ

1. ज्योतिमा अट्ठारहवी शताब्दी के राजस्थान चित्रों के परिप्रेक्ष्य में संस्कृति का अध्ययन, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2011, पृ.43.
2. श्याम सुन्दर जालानी, राजस्थान का स्वर्णिम फिल्म इतिहास, मरुधर प्रकाशन, जयपुर, 2011, पृ.255.
3. वही, पृ. 313.
4. वही
5. वही, पृ.307.
6. एम. डी. सोनी के साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, 26.10.2013
7. वही, पृ.311.
8. मोहम्मद ईद,राजस्थान का सामाजिक एवं सास्कृतिक इतिहास,

रिसर्च पब्लिकेशन, जयपुर, 2003, पृ. 57.
9. चेतन बनावत, राजस्थान के प्रचलित लोक देवी–देवीताओं की भक्ति में प्रस्फुटित लोक भजन, राजस्थान की लोक कला, रात पाण्डे(सम्पा.),शोधक, जयपुर, 2010, पृ.158.
10. वही, पृ.158.